Special Issue February 2018
MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

VIDYAWARTA

अंतर्जालीय हिंदी साहित्य : स्वरूप एवं संभावनाएँ

* संपादक *
डॉ. भाऊसाहेब नवले डॉ.प्रविण तुपे
डॉ.बापू घोलप

Scanned by CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

UGC Approved Sr.No.62750

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

विशेषांक

फरवरी—२०१८

अंतर्जालीय हिंदी साहित्य : स्वरूप एवं संभावनाएँ

Editor

डॉ. बापूजी घोलप

डॉ. भाऊसाहेब नवले

डॉ.प्रवीण तुपे

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

|| Index ||

01. वैश्वीकरण के दौर में अंतर्जालीय साहित्य की भूमिका
डॉ. रजनी, पटियाला || 11

02. संगणकीय साक्षरता और हिंदी साहित्य का संबंध
डॉ. साताप्पा लहू चव्हाण, अहमदनगर || 14

03. अंतर्जालीय हिंदी साहित्य स्वरूप एवं संभावनाएं
('इंटरनेट का हिंदी साहित्य के विकास में योगदान के विशेष संदर्भ में...')
डॉ.प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर, कोल्हापुर || 19

04. अंतर्जालीय हिंदी साहित्य का बहुआयामी परिदृश्य
डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले, अहमदनगर || 24

05. इंटरनेट पर प्रकाशित साहित्य की प्रासंगिकता
डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला, छिंदवाड़ा (म.प्र.) || 28

06. हिंदी भाषा का अंतरजालीय परिदृश्य
डॉ. दीपक रामा तुपे, इचलकरंजी || 32

07. हिंदी सिनेमा में लोकगीत
डॉ. बळीराम राख, बीड || 36

08. इंटरनेट पर प्रयुक्त हिन्दी की वैश्विक अभिव्यक्ति
डॉ. दीप चन्द्र पाण्डेय, पौड़ी गढ़वाल || 38

09. इंटरनेट का हिन्दी के विकास में योगदान
डॉ. राहुल उठवाल, पुणे || 40

10. अंतर्जाल पर प्रभावित हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन
डॉ. रितु, पटियाला || 45

11. इंटरनेट पर उपलब्ध पत्र–पत्रिकाओं की उपादेयता
डॉ. दीप्ति धीर, पटियाला || 47

12. इंटरनेट का हिन्दी पत्रिकाओं के विकास में योगदान
डॉ. नीतू कौशल, पटियाला || 49

Scanned by CamScanner

06

हिंदी भाषा का अंतरजालीय परिदृश्य

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, स्नातक तथा स्नातकोतर हिंदी विभाग,
दत्ताजीराव कदम आर्टस्, साइन्स एंड कॉमर्स, इचलकरंजी
ई—मेल : dipaktupe1980@gmail.com
मोबाइल : ०८८०५२८२६१०

वस्तुत: अंतरजाल एक—दूसरे से जुड़े संगणकों का विश्वव्यापी नेटवक है। इसके जरिए कई संगठन, विश्वविद्यालय, स्कूल—कॉलेज, वाणिज्यिक फर्मों आदि क्षेत्रों के संगठन एक—दूसरे से जुड़े हुए हैं। अंतरजाल से जुड़े संगणक आपस में अंतरजाल नियमावली (प्रोट्रोकॉल) के जरिए सूचना का आदान—प्रदान करते हैं। "इंटरनेट अपने—आप में स्वतंत्र रूप से कोई आविष्कार नहीं है, बल्कि यह कंप्यूटर और टेलीफोन की व्यवस्थित जोड़—गाँठ से बना संजाल है। बहुत—सी प्रौद्योगिकियों को मिलाकर किया गया एक अभिनव प्रयोग। एक रोचक वैज्ञानिक 'तंत्र—जाल'। ऐसा ग्लोबल, जिसम सूचना, संचार और तकनीक का साझा प्रयोग किया जाता है। जिसम तमाम तरह की सूचनाएँ निरंतर बहती रहती है। 'इंटरनेट' (चाह तो हिंदी प्रेमी इसे 'अंतरताना' भी कह सकते है।) अद्यतन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी है।"१ आज जितने काम अंग्रेजी में किए जाते हैं उतने सारे काम हिंदी में किए जा रहे हैं। लिखना, संजोना, पुराना लिखा और संजोया हुआ डाटा पुर्नप्राप्त करना। इसमें संशोधन, प्रिंटिंग, ई—मेल द्वारा भेजना हर तरह के काम हिंदी में होने लगे हैं। और तो और पूरी किताब के हिज्जों (स्पेलिंग) की जाँच वर्तनी जाँचक से कम्प्यूटर कर देता है। सूचना, जानकारी, किताब या अन्यान्य सामग्री दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में तत्काल पहुँच रही है। प्रिंटर निर्देश के अनुसार पृष्ठ पलटकर छाप रहा है। आज मेडिकल, अभियांत्रिकी, कानून, वाणिज्य, प्रबंधन अब हिंदी में पढ़ाया जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक अनुवाद सही ढंग से काम कर ले तो भारतीय भाषा में लिखा प्रसंग विश्व की किसी भी भाषा में पढ़ा जा सकेगा। वैसे ही वक्तव्य किसी भी भाषा के हों, उन्हें विश्व के किसी भी भाषा में सुना जा सकेगा। जालस्थल को संगणक पर देखने के लिए विशेष प्रोग्राम का प्रयोग किया जाता है, उसे वेब ब्राउजर कहते हैं। आज सफारी, फायरफॉक्स, इंटरनेट एक्सप्लोरर, ऑपेरा, ऑपेरामिनी, ऑपेरा मोबाइल, मोजिला, इंटरनेट एक्सप्लोर ९, इंटरनेट एक्सप्लोर १०, इंटरनेट एक्सप्लोर ११, मोजिला फायरफॉक्स, गूगल क्रोम जैसे ब्राउजर के विकास से इंटरनेट पर सूचना का अंतरण तेजी से होने लगा है। आप जानकारी हासिल करने के लिए सर्च इंजीन का सहारा ले सकते हैं। इसमें गूगल, याहू, बिंग, इंफोसीस, अल्टाविस्टा, लाइकोसिस, नॉर्दनलाइट्स, आर्ची, गोफर, पेरॅनिका, डब्ल्यू. ए. आई. एस. जैसे ऑनलाइन ब्राउजर कार्यरत हैं। इसके अलावा ऑनलाइन गूगल इनपुट टूल, क्विलपैड टाइपिंग टूल, वेबदुनिया विंडिक पैड, लिपिकार हिंदी टाइपिंग टूल्स, ब्रनह वर्चुअल हिंदी की—बोर्ड, देवनागरी की—बोर्ड जैसे ऑनलाइन हिंदी टाइपिंग टूल्स उपलब्ध है। ४सी गांधी से यूनीकोड, चाणक्य से यूनीकोड, कृतिदेव से यूनीकोड, यूनीकोड से ४सी गांधी, यूनीकोड से चाणक्य, यूनीकोड से कृतिदेव आदि हिंदी फॉन्ट कनवर्टर ऑनलाइन मौजूद हैं। सन् १९९० से इंटरनेट पर वेब पोर्टल का आरंभ हो गया। समसामयिक काल में विभिन्न क्षेत्र की जानकारी देने के लिए विभिन्न पोर्टल कार्यरत है। पोर्टल इंटरनेट और विश्वव्यापी वेब के संदर्भ में वेबसाइट्स के समूह को कहा जाता है। पोर्टल का शाब्दिक अर्थ है—प्रवेश द्वार। एक पोर्टल स्वयं एक जाल स्थल होता है। जिससे दूसरे अन्य संबंधित जालस्थलों का सर्फिंग कर सकते हैं। इंटरनेट को जुड़ने पर कई प्रकार के पोर्टल मिलते हैं। इसमें याहू, एओएल, आई गूगल, एमएसएन, नोकिया, ॲपल, माइक्रोसॉफ्ट, लिनक्स, आयमैक, आईफोन प्रसिद्ध हैं। पोर्टल आधारभूत जानकारी

Scanned by CamScanner

उपलब्ध करते हैं। कई तरह की सेवाएँ देते है। पोर्टल पर समाचार, स्टॉक मूल्य और फिल्म की गपशप देख सकते हैं। यह पोर्टल रोजगार, शिक्षा, सुरक्षा की सूचना देते हैं। इंटरनेट वेबसाइट्स ब्लॉग और सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का बोलबाला बढ़ रहा है। इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव स्वरूप आज प्रतिदिन करीब दो लाख नए ब्लॉग बन रहे हैं। हररोज एक अरब से ज्यादा प्रविष्ठियाँ दर्ज हो रही है। समग्र दुनिया धीरे–धीरे ऑनलाइन की दौड़ में शामिल हो रही है। हर एक देश दूसरे देश को पीछे छोड़ता चला जा रहा है। आज भारत विश्व में सबसे ज्यादा डाटा यूज करने वाला देश हो गया है। विभिन्न हिंदी वेबसाइट्स देशी–विदेशी खबर, वर्गीकृत विज्ञापन, कारोबार संबंधी सूचनाएँ, शेयर बाजार, शिक्षा, मौसम, खेलकूद, पर्यटन, तकनीकी, साहित्य, धर्म, दर्शन, संस्कृति, राजनीति, कृषि, यातायात, चिकित्सा, भाषा आदि की जानकारी दे रही है। इंटरनेट की गति का संकेत देते हुए कैलाशनाथ पांडेय कहते हैं–"इंटरनेट पर प्रकाश की गति से सूचना, आवाज, चित्र और आँकड़ा तथा अन्यान्य खबरों को कहीं भी आज भेज सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से आज खेलकूद, सूचनाओं का प्रकाशन, परियोजनाओं की जानकारी, कार्यालय से दूर रहकर भी व्यवसाय करना, विश्व भर के शिक्षा संस्थाओं, पुस्तक भंडारों, पुस्तकालयों के विषयों में जानना, शैक्षिक उपकरणों, उत्पादों हेतु तकनीकी सहयोग, उत्पादों को बाजार में भेजना, बेचना, रेल, हवाई जहाज के लिए टिकटों का आरक्षण करवाना कुल मिलाकर दुनिया की हर गली की जानकारी इंटरनेट के जरिए आज आसानी से उपलब्ध है।"[२]

हिंदी ई–बुक का खजाना डाउनलोड करने के लिए पीडीएफबुक डॉट अवरहिंदी डॉट कॉम (http://pdfbooks.ourhindi.com), ई–बुक्सपीडीएफ डॉट इन (http://www.ebookspdf.in), पीडीएफहिंदी डॉन इन (http://www.pdfhindi.in), ईबुक्सपीडीएफ डॉट इन (http://www.ebookspdf.in), हिंदुस्तानबुक डॉट कॉम (http://www.hindustanbooks.com), तामिलक्यूबे डॉट कॉम/हिंदी बुक्स (http://tamilcube.com/hindi-books), फ्रीहिंदीबुक्स डॉट कॉम (http://www.freehindiebooks.com), हिंदीसाहित्यदर्पण डॉट इन (http://www.hindisahityadarpan.in), मैत्रभारती डॉट कॉम/ई–बुक/हिंदी (http://matrubharti.com/ebook/Hindi), साइटस गूगल डॉट कॉम/साइट/हिंदीई–बुक्स (https://sites.google.com/site/hindiebooks), डिजिटल लाइब्रेरीऑनलाइन डॉट कॉम (http://digitallibraryonline.com), हिंदीई–बुक्स डॉट गा (http://www.hindiebooks.ga), स्क्राइब्ड डॉट कॉम (https://www.scribd.com), ४४बुक्स डॉट कॉम (http://www.44books.com) आदि जालस्थल है। आज हिंदी साहित्य में वेबासाइट को जालस्थल कहते हैं। अंतरजाल के जरिए सूचना पाने का साधन है–जालस्थल। हर जालस्थल का एक इंटरनेट पता होता है, जिसे यूआरएल कहा जाता है। वेब ब्राउजर इस पते के अनुसार जालस्थल को दिखाता है। जानकारी प्राप्त करने के लिए वेब ब्राउजर एचटीपीपी (http) लिपि का उपयोग करता है। जालस्थल के दो भेद हैं–स्थैतिक और गतिक। स्थैतिक जालस्थल एक ही बार निर्माण किए जाते हैं और गतिक जालस्थल हमेशा अलग–अलग पैरामीटर्स के तहत अलग–अलग सूचनाएँ देता है। हिंदी के अंतरजाल पर कई जालस्थल संचलित हैं। इनमें अक्षर पर्व, आविष्कार, अभिव्यक्ति, अनुरोध, अनुभूति, इंडिया टुडे, उर्वशी, गीत–पहल, कल्याण, गद्य कोश, जनोक्ति, कविता कोश, जानकी पुल, तहलका, निरंतर, प्रभासाक्षी, भारत संदेश, प्रवक्ता, भारत दर्शन, पूर्वाभास, युग मानस, मीडिया विमर्श, रचनाकार, साहित्य शिल्पी, रविवार, लघुकथा डॉट कॉम, साहित्य कुंज, लेखनी, विचार मीमांसा, समालोचन, वेब दुनिया, साहित्य रागिनी, सरिता, हिंदीनेस्ट डॉट कॉम, सृजनगाथा, हिंदुस्तान बोल रहा है, स्वर्गविभा, हिंदी कुंज, हिंदी समय, हिमालिनी आदि जालस्थल शामिल हैं, जो निरंतर सूचनाओं का संचालन करते हैं। इसके अलावा अक्षय जीवन, पंचायिका, परिचय, सनातन प्रभात, समाज विकास, सरस्वती, साधना पथ, पञ्चजन्य, पाखी, प्रज्ञा, प्रज्ञा अभियान, प्रतिध्वनि, सार संसार, अनुरोध, अन्यथा, अरगला, कलायन पत्रिका, कृत्या, कैफे हिंदी, क्रिकेट टुडे, क्षितिज, गर्भनाल, गृहलक्ष्मी, गृह सहेली, ताजमहल, तद्भव, तरकश,

Scanned by CamScanner

तास्तीलोक, दुधवा लाइव, निरंतर, साहित्य वैभव, स्पैन, स्कूप, हंस, समवेत, संस्कृति, शब्दांजलि, ई–विश्वा, वागर्थ, लेखनी, राष्ट्रधर्म, मनोवेद, रंगवार्ता, लोकमंच, वाङ्मय, मनुमति, भारत कोश, भारत दर्शन आदि पत्रिकाएँ आनलाइन सूचना का संचालन कर रही है।

हिंदी चिट्ठा शब्द सबसे पहले आलोक कुमार निर्माण किया। चिट्ठा (ब्लॉग) एक व्यक्तिगत जालपृष्ठ (वेबासाइट) है। चिट्ठा लिखवालो को चिट्ठाकार और चिटठ्ा लेखन का कार्य चिट्ठाकारी या चिट्ठाकारिता (ब्लॉगिंग) कहा जाता है। चिट्ठा समाचार, जानकारी, विचार, चित्र, वीडियो, संगीत संचारण का अहम माध्यम माना जाता है; जैसे–तरकश, काव्य प्रेरणा, ज्ञानसागर, ज्ञान दर्पण, सचेतक, सद्विचार, नईसोच, ज्ञानसिंधु, बालसंसार, महाशक्ति, चित्र, नुक्कड़, उन्मुक्त, गीत, जनोक्ति, गीत, जनोक्ति आदि। आज दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, गूगल समाचार, प्रभात खबर, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, राष्ट्रीय सहारा, जनादेश, नव भारत, खास खबर, हस्तक्षेप समाचार, हिंखोज समाचार, मेरी खबर, अपना शहर, क्राइम खबर आदि अखबार ऑनलाइन समाचारों का प्रसारण कर रहे हैं।

आज जी मेल, याहू मेल, रैडिफ मेल, हॉट मेल, ई–पत्र, सिफी, इंडिया टाइम्स, जपाक मेल आदि लोकप्रिय ई सेवाएँ कार्यरत हैं। ई–मेल के द्वारा सूचना–संदेश एवं पत्र दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में तत्काल पहुँचाएँ जा सकते हैं। आज यह ई–मेल सेवा बहुभाषी बन गई है। किसी भी भाषा में ई–मेल भेजने के लिए टंकन का ज्ञान अनिवार्य नहीं है। ध्वन्यात्मक लिप्यंतरण की अनूठी पद्धति के कारण किसी भी भाषा का फॉंट डउनलोड करने की आवश्यकता नहीं है। आज बाजार में आए आईपैड इसका सशक्त प्रमाण है। व्यक्ति रोमन अंग्रेजी की–बोर्ड से किसी भी भाषा का ई–मेल टाइपिंग करके भेज सकता है। इतना ही नहीं, गपशप (चैटिंग) लगा सकते हैं, शॉपिंग कर सकते हैं अर्थात् आप चौबीस घंटे खरीदी–बिक्री कर सकते हैं, शादियाँ भी तय कर सकते हैं। जीवनसाथी, शादी डॉट कॉम इसके सशक्त उदाहरण है। देश–विदेश की संस्कृति का जलवा भी इंटरनेट पर बिखेरा जा रहा है। इससे मूल्यों का आदान–प्रदान हो रहा है। होटल, बस, रेल, फ्लाइट्स का ऑनलाइन बुकिंग हो रहा है। रेल की ई–टिकट सेवा की इंडियन रेलवेज गर्वम ट डॉट इन वेबसाइट इसका प्रमाण है। इस वेबसाइट पर आप नि:शुल्क पंजीयन कर सकते हैं, नाश्ता, खाना रेस्तॉरंता से ऑनलाइन मँगवा सकते हैं। इंटरनेट का उपयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। आप अपना निजी काम इंटरनेट और कम्प्यूटर के जरिए निपटा सकते हैं। आप शेयर्स का ऑनलाइन लेन–देन कर सकते हैं। इंटरनेट क्रांति ने दुनिया भर से ज्ञान, जानकारी और डाटा का एक व्यापक फलक प्रदान किया गया है। आज इंटरनेट जानकारी का एक बहुत बड़ा जाल है। हम इंटरनेट पर शॉपिंग, बैंकिंग, रेडियो, फैक्स, फोन, वेब कॉन्फरेंसिंग, इंट्रानेट, टेलीविजन, वेब आदि सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। हम इंटरनेट से फोटो एवं आर्टिकल डाउनलोड कर सकते हैं और एक–दूसरे को भेज भी सकते है। दुनिया के तमाम लोग, युवक–युवतियाँ, बुजुर्ग लोग, लेखक से मिलकर इंटरनेट पर ब्लॉगिंग के जरिए हररोज नई–नई जानकारी दे रहे हैं। लाखों–करोड़ों लोगों ने इंटरनेट को आय का जरिया बना दिया है। इंटरनेट और ब्लॉग के प्रादुर्भाव ने पत्रकारिता के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। इंटरनेट इसलिए लोकप्रिय है कि यह सर्वव्यापी, खुला, तीव्र, सरल, सस्ता, लचिला, प्रमाणित साधन है। इंटरनेट ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को सत्य में परिणित किया है। इंटरनेट से जुड़े लोगों से ऑर्कुट, फेसबुक, ट्विटर, ई–मेल, वे२एसएमएस जैसे सोशल नेटवर्किंग सुविधा से संदेशों का आदान–प्रादान कर सकते हैं। माक झुकरबर्ग ने फेसबुक का निर्माण किया। इंटरनेट पर विभिन्न भाषाओं के कोश भी उपलब्ध है। इसमें ई–महाशब्दकोश, अंग्रेजी–मराठी शब्दकोश, अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश, जापानी–हिंदी शब्दाकोश, चीनी–हिंदी शब्दकोश शामिल हैं, जो निरंतर स्थाई सूचनाओं का संचारण करते हैं। इंटरनेट पर एक बहुत बड़ा ज्ञानकोश है–विकिपीडिया। जुलाई–२००३ में हिंदी विकिपीडिया का आरंभ हो गया। आज यह

Scanned by CamScanner

कोश दुनिया का ज्ञान और जानकारी एकमात्र मुक्त ज्ञानकोश बनता जा रहा है।

इंटरनेट यूजर्स विभिन्न समाचार पत्र पढ़ सकते हैं। इसमें राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, जागरण, नई दुनिया, २४दुनिया, विस्फोट, अमर उजाला, भडास मीडिया आदि शामिल हैं, जो ऑनलाइन समाचारों का संचालन कर रहे हैं। गूगल फास्ट फ्लिप से साहित्य, विज्ञान, कला, क्रीड़ा, राजनीति की जानकारी तुरंत मिल रही है। इसमें न्यूयॉक टाइम्स, वॉशिंगटन पोस्ट, बिजनेस वीक की ताजा जानकारी पढ़ सकते हैं। आज आई. टी. क्षेत्र में याहू, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियाँ अपना बिगुल बजा रही है। इंटरनेट ने ज्ञान के एकाधिकार को तोड़ा दिया है, साहित्य और वैचारिक किताबों को जोड़ा है। इंटरनेट के कारण दिनोंदिन दुनिया बहुत तेजी से सिकुड़ती जा रही है। इससे वैश्विक ग्राम की अवधारणा साकार हो रही है। इंटरनेट स्वयं संप्रेषण का बहुत सस्ता माध्यम है। आज के कई साहित्यकार वेब राइटर बन चुके हैं। वे विभिन्न विधाओं का ऑनलाइन लेखन कर रहे हैं। इससे ऑनलाइन फरमाइशी लेखन शुरू हो गया है। इंटरनेट ने बैंकिंग क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रांति की है। ई—बैंकिंग, कोर बैंकिंग प्रणाली ने देश—विदेश की सभी बैंकों को एक—दूसरे से जोड़ दिया है।

राज्य सरकार ने सभी पटवारियों को लैपटॉप अनिवार्य कर दिया है। राज्य सरकार ने कर्मचारियों को ऑनलाइन फॉर्म डाउनलोड करने की सुविधा उपलब्ध कराई है। पेन्शन महाकोश गवरमेंट डॉट इन वेबसाइट इसका प्रमाण है। इतना ही नहीं, आप इंटरनेट पर ऑनलाइन नौकरी के अवसर भी ढूंढ सकते हैं। इंटरनेट पर आप नोकरी डॉट कॉम, जॉब्सडीबी डॉट कॉम, इंडियन पार्टटाइम जॉब डॉट कॉम, सीआईओएल जॉब डॉट कॉम, ऑलटाइम जॉब डॉट कॉम, प्राइज्ड़जॉब्स डॉट कॉम, जिपअहेड डॉट कॉम आदि साइट ऑनलाइन रोजगार की जानकारी दे रही हैं। साथ ही दसाइटविझार्ड डॉट कॉम वेबसाइट इंटरनेट पर अर्थाजन किस तरह से किया जाता है, इसकी जानकारी दे रही हैं। आज इंटरनेट के विभिन्न प्रकार के लाभ हो रहे हैं। इंटरनेट के जरिए हम फाइल ट्रांसफर कर सकते हैं। एक कम्प्यूटर में मौजूद फाइल को किसी दूसरे शहर स्थित कम्प्यूटर में इंटरनेट के जरिए कॉपी कर सकते हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अंतरजाल के विकास में भाषा की अहम भूमिका रही है। हिंदी भाषा और अंतरजाल का संबंध अन्योन्याश्रित है। हिंदी भाषा और अंतरजाल के आपसी समन्वय ने मानव जीवन की रफ्तार तेज कर दी है। अंतरजाल से मानव विकास की तमाम चुनौतियाँ हल हो चुकी है। अंतरजाल ने हिंदी भाषा को 'विश्वभाषा' के रूप में स्थापित किया है। इससे मनुष्य दिनोंदिन एक—दूसरे के करीब आ रहा है।

संदर्भ संकेत:

१. सुमित मोहन, मीडिया लेखन, (नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन: प्रथम संस्करण २००५), पृ. ९९
२. कैलाशनाथ पांडेय, प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली—पटना, संस्करण: २००७, पृष्ठ—३२८

❑❑❑

Scanned by CamScanner